10/1/1967 :– एक ही घर में स्त्री ब्राह्मणी बनती है, तो पति शूद्र। बच्चा ब्राह्मण तो बाप शूद्र। तो घर में बहुत घोटाला पड़ जाता है। घर में भी बड़ा युक्ति से रहना है। बाप के ऊपर बहुत रेस्पॉन्सिबिलिटी है। मोह भी जब टूटे तब है बात। बच्चा अगर बाप की आज्ञा ना मानता तो वो बच्चा नहीं, वो कपूत है। भूक बसर कहा जाता है ना। वो तो जा(कर) बसर का भूक बनेंगे। भूक को फेंका जाता है। जो बसर अर्थात् काम के हैं वो देवता बन जाते हैं। बाकी भूक सब खत्म हो जावेंगे। कन्याओं को तो बहुत खड़ा होना चाहिए। कन्या पवित्र होती है। पतित बनी तो फिर पावन बनने में बड़ी मुश्किलात होगी। इसलिए कन्याओं पर जोर जास्ती दिया जाता है। कन्याएँ जास्ती पास होती है। बच्चों को प्रॉपर्टी का मोह रहता है। इसके लिए बाप युक्ति बताते हैं। प्रॉपर्टी तुम क्यों गँवाते हो। जिस समय ब्राह्मण उनको कहता है पति तुम्हारा गुरु ईश्वर है, उनकी आज्ञा पर चलना है तो उस समय लिखवा लेना चाहिए। जबान पर तो आजकल भरोसा नहीं है। जिस समय हथियाला बाँधे तो लिखवा लेना चाहिए फिर स्त्री कहाँ जावेगी। आज्ञा पर चलो नहीं तो भागों बाप के पास। स्त्री को तो आज्ञा पर चलना ही है। यह ज्ञान बड़े मज़े का है। इसको अच्छी रीति धारण करना है। ऐसे नहीं कि बाप से सुना फिर यहाँ की यहाँ रही। कहते हैं साथ ले जाओ। तुम बच्चों को स्वर्ग में ले जाते हैं। बाकी सबको मुक्ति। यह महाभारत लड़ाई मुक्ति–जीवनमुक्ति के गेट्स खोलती है। इन सब बातों को पहले थोड़े ही समझते थे। अब बाप ने (समझाया) है तब समझते हैं। अच्छा, मीठे–2, सिकीलधे, रूहानी, आज्ञाकारी, सपूत, फरमानबरदार, सर्विसएबुल बच्चों को सर्व मधुबन निवासियों सहित आज बुधवार के दिन मात–पिता, बापदादा का यादप्यार, ओमशांति, नमस्ते, ओम।